ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

मध्य अलकनन्दा बेसिन में पर्यावरण का बदलता स्वरूप

Changing Nature of Environment In Central Alaknanda Basin

Paper Submission: 15/06/2021, Date of Acceptance:24/06/2021, Date of Publication: 25/06/2021

किरन त्रिपाठी
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
प० ल० मो० शर्मा० रा० स्ना० महाविद्यालय,
ऋषिकेश, देहरादून,
उत्तराखंड, भारत

मंजू भंडारी
सहायक प्राध्यापक,
भूगोल विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
चिन्यालीसौड़, उत्तरकाशी,
उत्तराखंड, भारत

सारांश

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जो प्राकृतिक एवं मानवीय भूदृश्यों में निरन्तर चलता रहता हैं, प्राकृतिक तत्वों में यह परिवर्तन लम्बे समय में धीमीगति से होता रहता है परन्तु मानवीय हस्तक्षेप के कारण इस परिवर्तन में तीव्रता आ जाती हैं तथा कभी–कभी यह विनाश का रूप भी धारण कर लेती है। मानवीय तत्वों में परिवर्तन बड़ी तीव्र गति से होता है। जिसके कारण खाली भूमि बहुत कम समय मे नगरों में परिवर्तित हो जाती है। या कभी–कभी पलायन के प्रभाव में बड़ी वस्ती व उत्पादित कृषि भूमि बहुत कम समय में वंजर अवस्था में पहुँच जाती हैं, इस प्रकार का परिवर्तन उत्तराखण्ड के पर्वतीय पर्यावरण में भी दृ ष्टिगोचर होता है ।

Change is the law of life. Which continues in natural and human landscapes, this change in natural elements keeps happening at a slow pace in a long time, but due to human intervention, this change intensifies and sometimes it also takes the form of destruction. Changes in human elements take place at a very rapid rate. Due to which vacant land gets converted into cities in a very short time. Or sometimes, under the influence of migration, large settled and produced agricultural land reaches a barren stage in a very short time, this type of change is also visible in the mountainous environment of Uttarakhand.

मुख्य शब्द : परिवर्तन, आर्थिक विकास, पर्यावरण, पर्वतीय क्षेत्र, प्रवासदिनप्रतिदिन, पलायन, प्रभाव, प्रतिशत वृद्धि, प्रजातियाँ, प्राकृतिक वातावरण, दृष्टिगोचर।
Change, Economic Development, Environment, Mountain Area, Migration Day By Day, Migration, Effect, Percentage Increase, Species, Natural Environment, Visible.

प्रस्तावना

हिमालय के पर्वतीय क्षेत्रों में पर्यावरण का स्वरूप दिन प्रतिदिन बदलता दिखाई दे रहा है। इस परिवर्तन का मुख्य कारण पर्वतीय क्षेत्रों से जनसंख्या का बड़ी संख्या में मैदान की ओर पलायन है। जिससे वर्तमान समय में अधिकांश क्षेत्र जनविहीन हो चुके हैं उत्तराखण्ड हिमालय के पर्यावरण में 1970 के दशक से 2020 तक पर्याप्त परिवर्तन दिखाई देता है, छठे दशक तक उत्तराखण्ड का जन जीवन यहाँ पर प्राप्त प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर था, शिक्षा तथा आर्थिक विकास के अभाव में यहाँ की जनसंख्या द्वारा भूमि व वन संसाधनों का अंधा बुन्ध शोषण किया गया । धीरे–धीरे जनसंख्या का भार अधिक होने के कारण संसाधनों में कमी अनुभव हुई तथा रोजगार के लिए प्रवास शुरू हुआ और जनसंख्या का भार अधिक होने के कारण संसाधनों में कमी अनुभव हुई कि यह उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों की मुख्य समस्या बन गयी है, वर्तमान समय में पर्वतीय क्षेत्र के काफी गाँव खाली हो चुके हैं या खाली होने की कगार पर हैं। यह समस्या उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों के लगभग सभी गाँवों में देखने मिलती हैं परन्तु इसका अधिकांश प्रभाव यात्रा मार्गो से दूर स्थित गांवो पर अधिक दिखायी देता है। जो गांव यात्रा मार्गों में स्थित हैं वे आज भी आवाद स्थिति में हैं इसके अतरिक्त वे गाँव भी अधिक प्रभावित हैं जहाँ पण्डित लोग बसे हैं। जिसका मुख्य कारण रोजगार व पण्डिताई कार्यो हेतु लोगों का पंजाब हिमाचल व दिल्ली आदि क्षेत्रों में प्रवास करना है। राजपूतों के गाँवों की स्थिति आज भी कुछ हद तक ठीक है कृषिभूमि में भी परिवर्तन का मुख्य कारण गाँवों में रोजगार योजनाओं का संचालन होना है। क्यों कि इन योजनाओं से स्थानीय

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

जनता को प्रतिदिन कम श्रम से अच्छी मजदूरी मिल जाती हैं इसके अतरिक्त वंजर भूमि पर झाड़ियों के विस्तार से जंगली जानवरों की संख्या भी दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। जो अल्पकृषि भूमि को हानि पहुँचा रहे हैं। जिसका सीधा प्रभाव घटते कृषि भूमि उपयोग पर पड़ रहा हैं स्थायी प्रवास का प्रभाव यहाँ के पर्यावरण पर भी दृष्टिगोचर हो रहा है, मध्य अलकनन्दा घाटी के अन्तर्गत 30° 19′ उ0 अंक्षाश व 77^{0} 2′ पूर्वी देशान्तर पर 800 मी0–1100 मी० की ऊँचाई के मध्य देवलख ग्राम के पर्यावरणीय अध्ययन में यह पाया गया कि 1980–90 के दशक से वर्तमान समय के पर्यावरण में पर्याप्त परिवर्तन आया है।

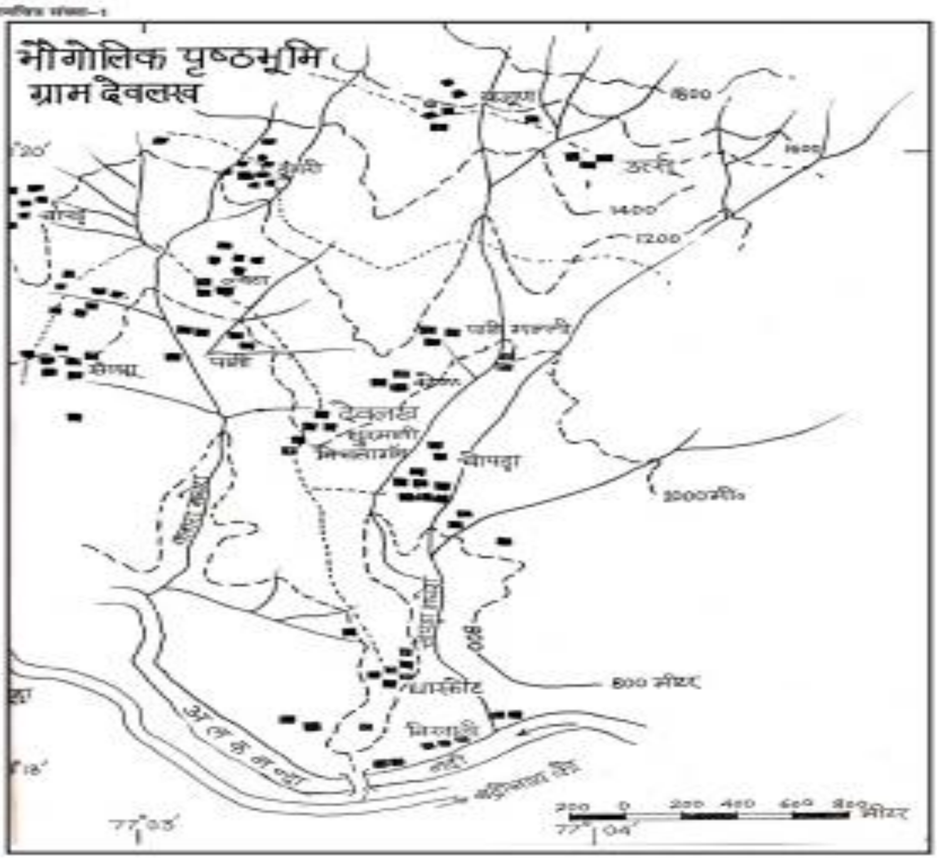

सन 1990 में ग्राम देवलख की जनसंख्या में कुल स्थाई पुरूषों की संख्या 73 व स्त्रियों की संख्या 106 व प्रवासित पुरूष की संख्या 52 व स्त्रियों की संख्या 54 थी जबकि 2000 में स्थाई पुरूषों की संख्या 54व स्त्रियों की संख्या 89 तथा प्रवासित पुरूष की संख्या 60 व स्त्रियों की संख्या 41 थी। सन 2020 में घट कर स्थाई पुरूषों की संख्या 23 व स्त्रियों की संख्या 38 रह गयी हैं प्रवासित पुरूष की संख्या बढ़कर 126 तथा स्त्रियों की बढ़कर 112 हो गयी है जिसका सबसे अधिक प्रभाव 30–40 आयुवर्ग में दिखाई देता है। जिसे तालिका संख्या 1, व 2 में दिखाया गया हैं।

ग्राम देवलख में सन 2000 से 2020 की जनसंख्या में परिवर्तन

आयु वर्ग	1990		प्रवासी		2020		प्रवासी		2019		प्रवासी	
	पु0	स्त्री	पु0	स्त्री	पु0	स्त्री	पु0	स्त्री	पु0	स्त्री	पु0	स्त्री
0-10	4	8	8	3	10	10	10	6	**5**	**4**	**20**	**17**
10-20	28	30	12	18	8	19	9	6	1	3	26	18
20-30	12	7	5	2	14	9	11	13	-	01	22	14
30-40	4	11	12	8	4	5	8	5	5	10	20	24
40-50	7	12	9	7	1	10	11	5	5	3	23	22
50-60	8	16	6	5	7	13	8	4	2	2	10	7
60-70	7	4	-	-	7	12	3	2	3	8	5	5
70-80	2	6	-	-	3	7	-	-	2	5	-	4
80-90	-	1	-	11	-	2	-	-	-	2	-	1
90-100	1	11	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-
100-से ऊपर	-	-	-	-	-	2	-	-	-	-	-	-

स्रोतः– प्राथमिक सर्वे द्वारा

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

ग्राम देवलख में प्रवासी जनसंख्या का प्रतिशत

	1990		2000		2000	
	पु0	स्त्री	पु0	स्त्री	पु0	स्त्री
कुल संख्या	73+52	106+54	54+60	89+41	23+126	38+112
	125	160	114	130	149	150
पलायन प्रतिशत	52	54	60	41	126	112
	41%	33.75%	52.63%	31.54%	84.56%	74.67%

स्रोतः— प्राथमिक सर्वे द्वारा

यहाँ के पर्यावरण पर पलायन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहा है, यहाँ का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 53.893 हेक्टर है। सन 2000 में जिसका 19.522 हैक्यटयर क्षेत्र कृषि कार्य में लगा था जिसमें 2.274 सिंचित कृषि भूमि में व 17.248 हेक्टयर असिंचित कृषि भूमि में तथा 1.566 हेक्टयर भूमि अकृष्य बंजर भूमि में तथा 29.257 हेक्टयर वन भूमि में व 3.548 हेक्टयर भूमि जलमग्न भूमि के रूप में थी परन्तु वर्तमान समय में इस भूमि उपयोग में पर्याप्त भिन्नता दिखाई देती हैं, जिसमें कृषि भूमि भाग पर रह गयी है। 5 प्रतिशत को छोड़र सम्पूर्ण कृषि भूमि कृष्य वंजर में परिवर्तित हो गयी है। इसमें भी सिंचित कृषि भूमि मानवीय श्रम के आभाव में मात्र 2 % आवाद रह गयी है। अतिरिक्त सिंचित कृषि भूमि का 30 प्रतिशत भाग असिंचित कृषि भूमि में तथा 70 प्रतिशत भाग कृष्य वंजर में बदल गया है। सम्पूर्ण जलमग्न भाग का 20 प्रतिशत छोड़कर 80 प्रतिशत भाग वृक्ष व झाड़ियों से आच्छादित हो गया है चारागाह क्षेत्र भी पशुचारण के अभाव में सघन वनस्पति क्षेत्र में परिवर्तित हो गये है। जिसे मानचित्र संख्या 2 व 3 में दिखाया गया है।

मानचित्र संख्या –2

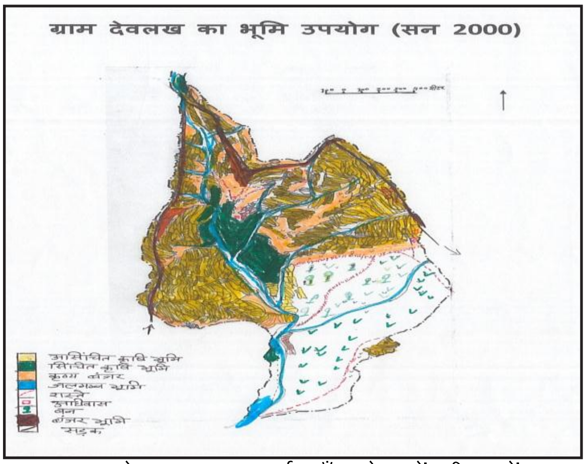

इसके अलावा सम्पूर्ण गाँव क्षेत्र में भी वृक्षों का घनत्व बड़ा है। पूरे गाँव के कुछ चुने गए क्षेत्रों में सन 2000 में चारा वृक्षों की संख्या 1637, इमारती वृक्ष 415 तथा औषधीय वृक्ष 109 थे जिनकी संख्या 2020 में बढ़कर क्रमशः 7271, 1493, तथा 664 हो चुकी है।

मानचित्र संख्या –3

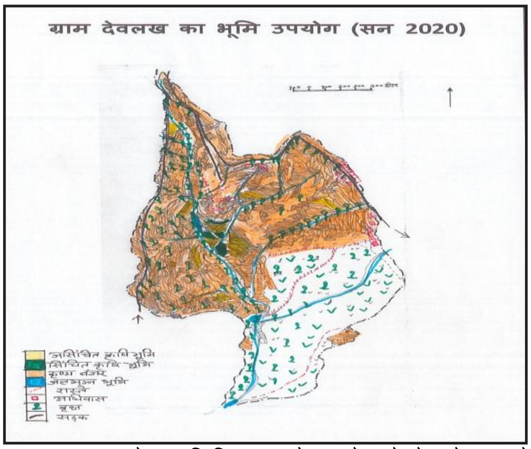

इससे अतिरिक्त चुने गये क्षेत्रों में, वृक्षों के प्रतिशत में भी वृद्धि हुई है जिसे तालिका संख्या 3 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या–3 ग्राम देवलख में कुल वृक्ष संख्या व प्रतिशत सन 2000/2020

वृक्ष प्रजाति	[illegible], सिंग्लास पीपल खेत, करला,	गरियोथ -I, गरियोथ-II, पुरियोथ	लम्बपूंगा, रखड़ाविठा	मूल्यागदेरा, मल्यागदेरा, गदेरासेरा	खिलोती गदेरा, खिलोती खेत	खुलई, सम्क्योत, डाग वोल्य	डांगपल्या, रगड़ा, कनरा	कुण्डलिया, डंडरा, रवालियुधार	भटना	छंजा	कुल
चारा वृक्ष	130/625	82/438	78/411	104/414	83/468	305/1269	140/737	516/1698	156/1034	43/177	1637/7271
इमारती वृक्ष	39/155	29/129	12/103	33/124	21/182	24/182	93/155	46/160	83/208	35/95	415/1493
औषधीय वृक्ष	10/38	8/25	5/16	7/23	3/81	35/154	22/79	9/78	8/165	2/5	109/664
कुल योग	179/818	119/592	95/530	144/561	107/731	364/1605	255/971	571/1936	247/1407	80/277	
कुल प्रतिशत	17.95/82.07	16.73/83.26	15.2/84.8	20.42/79.57	12.76/87.23	18.48/81.51	20.79/79.20	22.77/77.22	14.93/85.06	22.40/77.59	

स्रोतः– प्राथमिक सर्वे द्वारा

इसमें से कुछ वृक्ष प्रजातियों में वृद्धि दिखाई दे रही है। जैसे तुन, खेड़ा, कचानार, डेकड़, सेमल, शीशम उमरा इनकी वृद्धि कृषि व जलमग्न क्षेत्र में अधिक हुई है। चीड़ पीपल, वुकन, सादन, के वृक्षों का घनत्व वन भूमि में अधिक हुआ है

मानचित्र संख्या–4

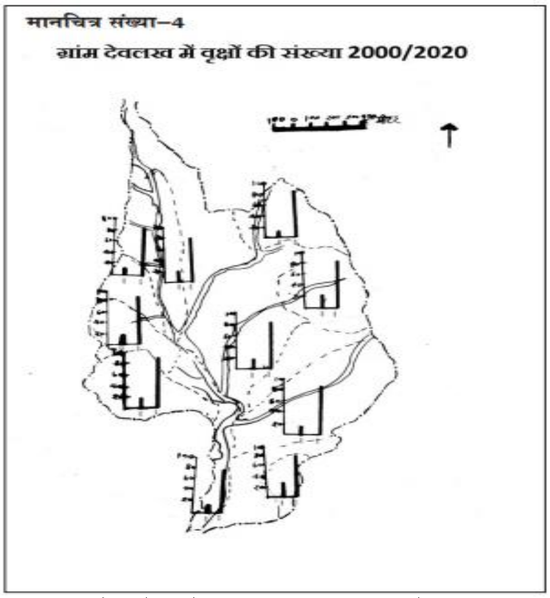

गाँव क्षेत्र में कुछ नयी प्रजाति के वृक्ष भी तीव्र गति से वृद्धि कर रहे हैं। जिसमें वारीक बुकन, डेकड़, आदि जो मुख्य रूप से अधिवास, जलमग्न भागों तथा वन भूमि के पूर्वी भाग में अधिक बढ़ा है। इसके अतरिक्त जलमग्न भागों में उमरा खेड़ा तुन जामुन डेकड़ निरगुण्डी वृक्षों के साथ–साथ झाड़ियों में वृद्धि हुई है। इसके विपरीत कुछ वृक्ष प्रजतियों की संख्या घट रही हैं जैसे महुवा सहजन आदि, झाड़ियों की प्रजतियों में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा है। जिसमें लैनटाना व कालावसिगा का क्षेत्र बड़ा है। हिसर सुराई कण्डाली, रामबाण, लंकावेल का क्षेत्र घटा है।

बेल प्रजाति में भी गिलोय, मालू, डाकुली का क्षेत्र तीव्र गति से बढ़ रहा है जबकि विरालू किंगरि का क्षेत्र घट रहा है। घास प्रजाति में भी घास के क्षेत्रों में काफी ह्रास हो रहा है। जिसका मुख्य कारण वृक्ष व झाड़ियों की वृद्धि है। इसमें भी चीड़ व लैनटाना का सबसे अधिक प्रभाव है। जिसे तालिका संख्या 3,4,5 व 6 विस्तृत रूप दिखाया गया है।

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-5* June- 2021
Innovation The Research Concept

तालिका संख्या–4 — ग्राम देवलख में चारा वृक्ष सन 2000/2020

वृक्ष प्रजाति	पल्लिसारी, सिंग्लास पीपल खेत, करला,	गरियोथ -I, गरियोथ-II, पुरियोथ	लम्बपूंगा, रखड़ाविठा	मूल्यागदेरा, मल्यागदेरा, गदेरासेरा	खिलोती गदेरा, खिलोती खेत	खुलई, सम्न्योत, डांग वोल्य	कुण्डलिया, डंडरा, खलियूधार	भटना	डांग पल्या, रगड़ा, कनरा	छंजा	कुल
कचनार	12/58	6/25	13/57	4/18	2/26	38/106	6/31	20/38	6/29	2/6	109/194
खेंडा	20/82	9/60	8/50	10/44	8/60	9/43	28/88	28/70	10/40	2/6	132/543
भीमल	9/50	10/40	11/52	16/48	18/62	36/80	22/62	38/111	10/44	2/4	172/553
सांदन	15/95	12/54	6/28	4/20	6/48	28/160	10/52	54/250	40/300	10/38	185/1045
टेंटिया	12/36	4/25	2/18	2/10	4/18	6/32	3/39	58/200	8/46	2/10	101/426
उमरा	2/6	2/8	2/6	10/26	4/32	8/50	12/62	20/44	2/58		62/292
खडिक	7/26	0/12	2/10	4/14	6/25	6/36	8/40	12/38	6/14		51/215
कल्मिंडा	12/50	14/48	10/38	2/12	6/20	24/280	5/60	98/300	38/240	20/52	229/1090
दारुली	12/82	6/56	8/72	5/30	8/36	18/94	11/42	36/70	10/39	2/6	116/527
किमला	4/24	3/12	1/8	8/45	9/48	8/34	7/36	24/64	2/10		66/281
बुक्कन	12/44	4/28	1/22	0/17	2/12	38/160	4/29	70/260	8/52	2/8	141/632
जामुन	3/22	0/2	0/2	2/18	0/10	0/10	2/8	15/54	0/60		22/186
पिल्लू	6/34	4/26	8/32	5/23	2/25	12/56	4/42	30/78	8/40	1/4	80/360
सेतुत				10/28	0/12	2/10	0/4		2/8		14/62
कनीस		4/28		2/10		80/160	6/70	24/56	4/36		120/300
छचरी	4/16	5/14	6/16	10/46	8/34	9/52	12/60	15/65	2/8		71/311
बारीक बुक्कन				0/15			0/12		0/20		0/47
घुघती						1/6					1/6
कुल	130/625	82/438	78/411	104/414	83/468	305/1269	140/737	516/1698	156/1024	43/177	

स्रोतः– प्राथमिक सर्वे द्वारा

तालिका संख्या–5 — ग्राम देवलख में इमारती वृक्ष सन 2000/2020

वृक्ष प्रजाति	पल्लिसारी, सिंग्लास पीपल खेत, करला,	गरियोथ -I, गरियोथ-II, पुरियोथ	लम्बपूंगा, रखड़ाविठा	मूल्यागदेरा, मल्यागदेरा, गदेरासेरा	खिलोती गदेरा, खिलोती खेत	खुलई, सम्न्योत, डांग वोल्य	कुण्डलिया, डंडरा, खलियूधार	भटना	डांग पल्या, रगड़ा, कनरा	छंजा	कुल
तुन	4/48	8/42	4/45	13/75	9/77	8/70	4/14	8/38	12/45	1/6	71/490
असिन	31/85	18/43	6/12	5/22	8/22	9/42	7/26	28/70	9/50	2/10	123/414
चिड	0/10	0/2		1/1	0/2	-	18/60	10/45	1/8	0/75	30/239
शीशम	0/8	1/34	2/46	0/5	3/36	-					6/129
बांज							1/9	2/8			3/17
महुवा	4/4	1/2		2/4		12/16	9/14	42/38	65/30	32/4	167/110
खेर						1/4		0/4	2/12		3/20
आम		1/6		2/18	1/45	5/70	0/7	1/5	1/10		11/161
कुल योग	35/155	29/129	12/103	33/124	21/182	24/182	46/160	83/208	93/155	35/95	

स्रोतः– प्राथमिक सर्वे द्वारा

तालिका संख्या–6 ग्राम देवलख में औषधीय वृक्ष सन 2000/2020												
वृक्ष प्रजाति	पल्लिसारी, सिंग्लास पीपल खेत, करला,	गरियोथ -I, गरियोथ-II, पुरियोथ	लम्बपूंगा, रखड़ाविठा	मुल्यागदेरा, मुल्यागदेरा, गदेरासेरा	खिलोती गदेरा, खिलोती खेत	खुलई, सम्क्योत, डांग वाल्य	कनरा	कुण्डलिया , डंडरा स्वालियुधार	भदला	छंजा	कुल
आवला	2/10	0/2	3/10	0/1	2/14	15/60	4/25	4/36	46/70		76/228
हरहड	6/24	1/2				2/40	7/16	1/4	19/67	1/3	37/156
बहेरा				1/2	1/4						2/6
निरमुंडी		6/18		4/12	0/36		10/24	0/4			20/94
डेकेड़				0/4	0/25	0/6	0/10	2/20			2/65
नीम								0/2			0/2
ढाक	2/4	1/3	2/6	2/4	0/2	18/48	1/4	2/12	16/28	1/2	45/113
कुल योग	10/38	8/25	5/16	7/23	3/81	35/154	22/79	9/78	8/165	2/5	

स्रोतः– प्राथमिक सर्वे द्वारा

ग्राम देवलख में वृक्ष प्रजातीया

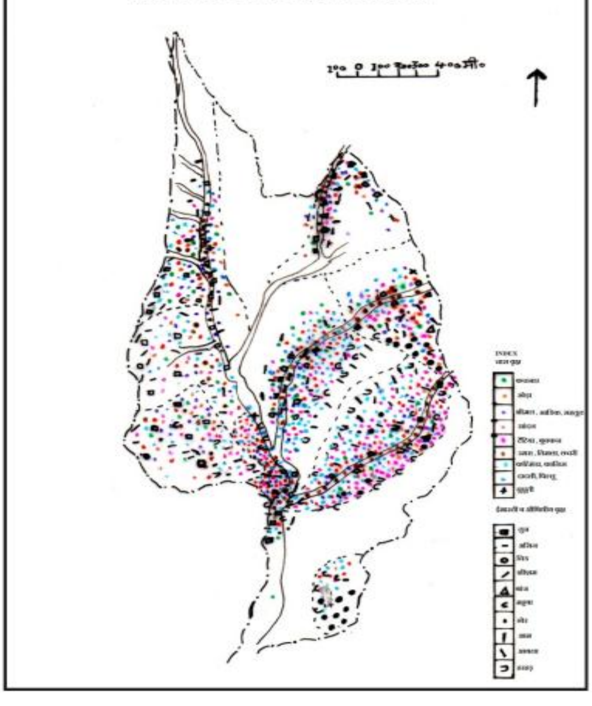

घास प्रजाति में मोटी घास भमकोरिया, परालिया आदि में वृद्धि हुई है। जबकि गोरख्या व कुम्बिरिया प्रजाति का क्षेत्र बहुत कम रह गया है, कृषि योग्य वंजर भूमि पर कुम्वर व दूव का प्रतिशत बढ़ा है। जलमग्न भूमि में बांस जंगली आम के वृक्षों में वृद्धि हुई है।

वनस्पति पर्यावरण के साथ–साथ जन्तु पर्यावरण में भी पर्याप्त परिवर्तन दिखाई दे रहा है जहाँ वनस्पति आवरण में वृद्धि हुई हैं वहीं जन्तुओं की संख्या में भी वृद्धि देखी जा रही है 20 वी शताब्दी के अन्त तक जिन जीवों का बाहुल्य था उनमे कुछ प्रजातियों में तीव्र वृद्धि देखने को मिली तथा कुछ प्रजातियाँ विलुप्त हो गयी है। तथा कुछ प्रजातियाँ नयी देखी गयी है।

कुछ जीव जन्तुओं में वृद्धि हुई जैसे बाघ, हिरन, आदि, विलुप्त प्रजातियों में शियार, तितरियाल, शैल, जंगली खरगोश आदि।

नवीन प्रजातियों में लगूर, बंदर, जंगली सुअरों की संख्या में तीव्र वृद्धि देखी गयी है।

पक्षी वर्ग में भी परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देता है। जिसमें पुरानी प्रजाति की पक्षियों में इस हुआ है। तथा कुछ प्रजातियों में वृद्धि देखी गयी है कुछ प्रजातियां नयी दिखाई दे रही है। ह्रास होने वाली प्रजातियों में गौरिया, घुघती, सैटुली, सुरणी, कोआ आदि हैं। वृद्धि वाली प्रजातियों में तीतर जंगली मुर्गीयाँ आदि है। नयी प्रजाति में मोर, सफेद सिर वाली पक्षियां इत्यादि। कृषि पर्यावरण

में भी पर्याप्त परिवर्तन हुआ है। मानव व पशु श्रम की कमी के कारण असिंचित भूमि के केवल 5 प्रतिशत भाग में केवल झंगोरा मण्डुवा व दालें बोई जा रही है जबकि सिंचित भूमि में भी 2 प्रतिशत भाग को छोड़कर 30 प्रतिशत भाग में झंगोरा दाले सब्जी आदि बोई जाती है बाकि 68% भाग वंजर अवस्था में परिवर्तित हो चुका है। शस्य संयोजन की दृष्टि से झंगोरा व गेहूँ पहले स्थान पर मढ़वा व दाले दूसरे स्थान पर तथा धान का क्षेत्र नाम मात्र रह गया है, जो सन 2006 तक प्रथम स्थान पर हुआ करता था झंगोरे का प्रथम स्थान पर होना पशुओं को चारा की उपलब्धि है।

पशु पालन में भी पर्याप्त परिवर्तन परिलक्षित हो रहा हैं जिसमें देशी प्रजाति की गायों का स्थान जर्सी गायों ने ले लिया है जिसमे देशी गायों का प्रतिशत केवल 50 प्रतिशत रह गया हैं सन 1990 में कुल भैसों की संख्या 26 थी गाय की संख्या 70 व बैलों की संख्या 16 थी 2020 में घटकर भैस 3 गाय 28 व बैलों की संख्या शून्य हो गयी है। जिसे तालिका संख्या 7 में दिखाया गया है।

ग्राम देवलेख में पशुपालन (सन 2000 – 2020)

	1990			2000			2000		
	भैस	बैल	गाय	भैस	बैल	गाय	भैस	बैल	गाय
क्र. सं0	26	70	16	19	53	20	3	28	0
कुल प्रतिशत	100%	100%	100%	73.08%	75.71%	125%	11.54%	40%	0%

स्रोतः– प्राथमिक सर्वे द्वारा

इन सबके चलते खाद्यानों में भी पर्याप्त अन्तर दिखाई देता है जिसमें स्थानीय उपज का स्थान बाहरी खाधानों ने ले लिया है। असिंचित भागों में लाल चावल वाली धान के स्थान पर सफेद चावल बाली धान, लाल झंगोर के स्थान पर सफेद झंगोरा, काले मुण्ड्वे के स्थान पर लाल मण्डुवा, काले भट्ट का स्थान सोयाबीन ने ले लिया हैं इसके अलावा कोणी (मोटा अनाज) खाद्यानों से ही बाहर हो चुका है। कृषि पर्यावरण में कृषि तकनिकी, या विधियों में भी परिवर्तन पाया जा रहा है। मानव व पशुश्रम की कमी के चलते जिन खेतों में रवी या खरीफ की फसल के लिए तीन बार हल चलाया जाता था उनमें अब एक ही बार हल चलाया जाता है। जोतों का आकार भी दिन प्रतिदिन बिना मानवीय श्रम के छोटा होता जा रहा है। बदलते हुए पर्यावरण का प्रभाव यहाँ की जलवायु पर भी हुआ था, सन् 2010 तक ग्रीष्म ऋतु में इस क्षेत्र में बहुत अधिक गर्मी महसूस की जाती थी परन्तु वर्तमान में ग्रीष्म ऋतु के तापमान में कमी आयी है। इसी प्रकार वर्षा की मात्रा में भी प्रभाव दिखाई देता हैं पहले गाँव के काफी ऊपर 1300 मी० की ऊँचाई (खड़पत्या वाले भाग तथा अलकलन्दा नदी की तरफ के ऊपरी भागों (हरियाली डांडा) में वर्षा अधिक होती थी, परन्तु बीच का ये सम्पूर्ण क्षेत्र वर्षा से वंचित रहता था। लेकिन वर्तमान में इस क्षेत्र की वर्षा में वृद्धि हो रही है। प्राकृतिक वातावरण के बदलते पर्यावरण का प्रभाव यहाँ के सांस्कृतिक वातवरण पर भी दिखाई दे रहा है जिसमें पठाल वाले मकानों का स्थान सिमेंट वाले मकानो ने लिया हैं पुराने त्योहार परम्पराओं पर भी पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दृषिगोचर होता है मनोरंजन के साधनों में रामलीला पौराणिक कथायें समाप्त हो चुकी है। शादी विवाह के कार्यों में उपयोग होने वाले पत्तल पत्तों द्वारा बनाये जाते थे जिनकी जगह डिस्पोजरों ने लेली है। बड़े कार्य सार्वजनिक रूप से गाँव की जनता द्वारा किये जाते थे, वे भी अब बाहरी मजदूर लगाकर किये जाते हैं पहले गाँव की पंचायती सामग्री का प्रयोग करके कार्य सम्पन होते थे। अब टैन्ट व्यवस्था से सम्पन होते है।

अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन क्षेत्र का मुख्य उद्देश्य है कि पर्वती क्षेत्रों में पलायन के प्रभाव से परिस्थितिकीय की अच्छा विकास दिखाई दे रहा है वनस्पतियों की प्रजातियों में वृद्धि व विविधता अधिक दिखाई दे रही है उस पर आश्रित जानवरों में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा है फसलों का क्षेत्रफल घट रहा है माननीय हस्तक्षेप पर्यावरण पर कम हो रहा है।

निष्कर्ष

पर्वतीय क्षेत्रों में आर्थिक विकास के तहत, शिक्षा, रोजगार, चिकित्सा सुविधाओं के प्रभाव में पिछले तीन चार दशकों से पलायन की प्रवृति देखी गयी है। जिससे वर्तमान समय में अधिकांश गाँव जनविहिन हो चुके हैं जिसका सीधा प्रभाव यहाँ के प्राकृतिक वातावरण पर दृष्टिगोचर होता है जिस कारण, गाँव क्षेत्रों के भूमि उपयोग मे पर्याप्त परिवर्तन हुआ है कृषि भूमि का स्थान कृष्यवंजरो ने ले लिया है पशुसंसाधन की कमी के कारण वनस्पतियो का घनत्व बड़ा है मानवीयश्रम व पशुश्रम की कमी के कारण अधिकांश कृषिभूमि बंजर हो चुकी है। स्थानीय फसलों के उत्पादन में भी कमी आ रही है वंजर भूमि पर झाड़ियो व वनस्पति के घनत्व के कारण कोमल घास की प्रजातियों का हास हो रहा है। साथ ही उन निर्भर रहने वाले जन्तुओं की संख्या भी कम हो रही है। मोटी घास व झाड़ियों में वृद्धि के कारण जंगली जानवरों की संख्या बढ़ रही है। वनस्पति आवरण बढ़ने के करण यहाँ जलवायु में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा है। जैसे तापमान में कमी, वर्षा में वृद्धि, आईता में वृद्धि आदि।

सरकारी ग्रामीण योजनायों कि उपलब्धता के कारण आजीविका में वृद्धि होने के करण ईधन की जगह प्राकृतिक गैस व जल विद्युत ऊर्जा के प्रयोग का प्रभाव वनस्पति आवरण पर स्पष्ट दिखाई देता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *नेगी पी0 सिंह 1991 पारिस्थितकी विकास एवं पर्यावरण भूगोल*
2. *खर्कवाल डा0 1997 हिमालय का प्रादेशिक भूगोल*
3. *नेगी प्रीतम 1998 उत्तरखण्ड हिमालय में वन विभाग*
4. *नौटियाल शिवानन्द पर्यावरण समस्याओं समाधान*
5. *कुमार के एन नन्द 1989 होली हिमायल ए ज्योग्रफीकल इष्टर प्रिदेशन आफ गढ़वाल हिमालय,पब्लिकेशन नई दिल्ली*
6. *कुमार कमलेश मदन 1993 हिमालय पर्यावरा एवं भूमि उपयोग स्वरूप, सिंह रावत तक्ष शिला प्रकाशननई दिल्ली*
7. *हुसैन माजिद कृषि भूगोल प्रकाशन शारखा दिल्ली 48321 124 अंसारी रोड दरियागंज नई दिल्लीपर्यावरण नियोजन एवं परिस्थितिक विकास*
8. *गोविन्द – पर्यावरण परम्परा और अपसंस्कृति तेज प्रकाशन*
9. *रावत, एम, एस – हिमालय क्षेत्रिय स्वरूप एवं पर्यावरण।*